①

बिहारी

प्रश्न → "जिस कवि में कल्पना की समाहार शक्ति के साथ भाषा की समास शक्ति जितनी ही अधिक होगी उतना ही वह मुक्तक की रचना करने में सफल होगा"? इस कथन के परिप्रेक्ष्य में बिहारी के मुक्तक काव्य की परीक्षा कीजिए?

अथवा → "मुक्तक काव्य में जो गुण होना चाहिए वह बिहारी के दोहों में अपने चरमोत्कर्ष पर है" मुक्तक की विशेषताओं के आधार पर इस उक्ति की समीक्षा सोदाहरण कीजिए?

उत्तर → अग्निपुराणकार ने मुक्तक का लक्षण प्रस्तुत करते हुए लिखा है —

"मुक्तकम् श्लोक एवैक श्चमत्कार क्षमः सताम् अर्थात् मुक्तक उस रचना को कहते हैं जो अपना अर्थ व्यक्त करने में स्वतः सामर्थ्य हो इसका अभिप्राय यह है कि जिस छन्द का लगाव पूर्व पर किसी दूसरे छन्द से नहीं होता।

वह अनुबन्ध हीन स्वच्छन्द पर स्वतः अर्थ द्योतन में समर्थ रचना मुक्तक कहलाती है। यह प्रबन्ध से इस अर्थ में भिन्न होता है कि प्रबन्ध रचना सानुबन्ध होती है —

सानुबन्धो महाकाव्यं।

आचार्य शुक्ल के मत में — यदि प्रबन्ध काव्य विस्तृत वनस्थली है तो मुक्तक एक चुना हुआ गुलदस्ता।

जाने कई दृष्टियों से मुक्तकों का वर्गीकरण किया गया है पर हम अपनी आवश्यकतानुसार दो भागों में ही लेंगे। आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने लिखा है — मुक्तकों के दो प्रकार हैं

रचनाएँ आती हैं। एक को सरस या रसयुक्त कहना चाहिए और दूसरी को नीरस या रसविहीन आगे रसविहीन का स्पष्टीकरण करते हुए उन्होंने लिखा है ——

"रसविहीन से यहाँ तात्पर्य है तथ्य-व्यंजक रचनाओं से" इस दृष्टि से बिहारी के मुक्तक सरस मुक्तकों की कोटि में आएँगे। यदि रसविहीन मुक्तक के उदाहरण में यत्र तत्र उपलब्ध हो जाते हैं जैसे ——

कनक कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय
उहि खाय बौराय नर, इहि पाय बौराय।"

काव्य मीमांसाकार राजशेखर ने मुक्तक के पाँच प्रकार बताए हैं —— शुद्ध, चित्र, कथोत्थ, संविधान, कभू और आख्यानमान।

जो मुक्तक इतिवृत्त विरहित हो वह शुद्ध के नाम से अभिहीत होता है यदि शुद्ध को विस्तार दिया जाय तो वह चित्र कहा जाएगा। कथा से उद्भूत होने वाला मुक्तक कथोत्थ कहा जाता है। किसी रोचकता पूर्ण घटना या संविधान से संयुक्त संविधान कभू की कोटि में रखा जाएगा। आख्यानमान मुक्तकों में ऐतिहासिक आख्यान की कल्पना रंजित बना दिया जा सकता। बिहारी सतसई में सभी उदाहरण मिलते हैं।

शुद्ध मुक्तक ——→

अंग अंग छवि की लपट उपटति जाति अछेह।
खरि पातरि उर तऊ लगी भरि सि देह॥

इसमें कुछ नहीं है नायिका का सहज सौंदर्य अपने आप चित्रित हो उठता।

Scanned with CamScanner

मिश्र मुक्तक →

आप आप जानती करी नेटव नाना आदि पूरी करते हैं यह हैं देखते हैं. इनमें दिनुनियोंके इसमें नायिका के चिन्तित विचार किया गया

संविधान कथ्य →

नायिका नायक के मिलन श्रृंगार आदि आदि नायो नायिका आँगन हाती दर्शन दुवाम इसमें धूर्त नायक की छलपूर्ण प्रेम क्रीड़ा का कथन है जो हैमा रंजक होता है।

आख्यान मान →

नाह उरज नाहिर नारंग जोबन सुहायौ है, कैसो पीतज को बाँधो है कैसो सावगतन है? - इसमें स्वयं का वर्णन ऐतिहासिक या प्रागैतिहासिक किया गया है, उस कल्पना के मिश्रण द्वारा रमणीय बना दिया गया है।

कथीत →

नाह परागा नाही मधुर मधु नाही विकास यहि काल अलि कली ही सो बंध्यो आगे कौन हवाल।।

कथीत और व्याख्यानमान मुक्तक बिहारी में कम मिलते हैं।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने मुक्तक काव्य की विशेष ~~क्ष~~ क्षमता की ओर संकेत करते हुए कहा है ——— जिस कवि में कल्पना के समाहार शक्ति जितनी ही अधिक होगी उतना ही वह मुक्तक की रचना में सफल होगा।

यह क्षमता बिहारी में पूर्ण रूप से वर्तमान थी। बिहारी सतसई में मौलिक सूझ और दर्शनीय भाषा की कसावट, कल्पना की समाहार शक्ति आदि सभी बातें चरमोत्कर्ष पर मिल जाती है। समास पद्धति और कल्पना की समाहार शक्ति से बिहारी दोहे में भी बहुत कुछ कह जाते हैं वे संक्षेप

कथन के नियोजन है ——.

बिगत पाप बिन्दु आती फिर आखि राज ब्रजवेशन
कान्ह किशोरी करत है रवहे भजाने आलन।"

उपरोक्त दोहे में गोवर्धन धारण की पूरी कथा आ गयी है कृष्ण ने पहाड़ उठाकर हाथ में धारण कर लिया है। अचानक राधा पर दृष्टि पड़ते ही कृष्ण का कम्प होता है कृष्ण का हाथ काँपते ही पहाड़ गिरने लगता है ब्रजवासी हाहाकार करने लगते हैं राधा के दर्शन से कम्प हुआ यह देखकर कृष्ण स्वयं लज्जित हो जाते हैं। इतनी लम्बी कथा को बिहारी ने छोटे से दोहे में भर दिया है। बिहारी जीवन के दौरान में होने वाली क्रियाओं में से कुछ को ही कहते हैं और समस्त प्रसंग को गुप्त रखते हैं। इसके लिए प्रसंग गर्भत्व को समझना पड़ता है ——

निरखि बुलायो बिलोकि यत प्रौढ़ तियारस घूमी
पुलकी पसीजत पूत को पिय चूम्यौ मुख चूमी।

उपरोक्त में नायक और नायिका मिले और भी बहुत से लोग थे। नायक ने नायिका (परकीया) के पुत्र का कपोल चुम्बन किया नायिका ने अपने पुत्र को पास बुलाया और नायक की ओर देखकर रस से गद्गद होकर अपने प्रेमी द्वारा चुम्बित पुत्र के मुख को चूम लिया। इस प्रकार उसने रति करने की इच्छा प्रकट की।

अलंकारों की योजना भी इस कवि ने बड़ी कुशलता से की है। किसी-किसी दोहे में कई अलंकार उपस्थित हैं पर उनके कारण कहीं उलझन नहीं आया।

इस दोहे में सांगरूपक कितना सुन्दर बन पड़ा है।

सनि कज्जल चख-झख लगन, उपज्यौ सुदिन सनेहु।
क्यौं न नृपति ह्वै भोगवै लहि सुदेसु सबु देहु॥

सनि - नक्षत्र यदि मीन लग्न में है और इस लग्न में किसी के पुत्र का जन्म हो - तो वह अवश्य राजा होता यहाँ नेत्र रूपी पुत्र का जन्म हुआ और काजल रूपी सनि इसी समय नेत्र रूपी मीन में लगा रहा है। अब यह जो स्नेह रूपी पुत्र है वह शरीर रूपी सुंदर देश को पाकर अवश्य राज्य करेगा। अर्थात विवाह होगा।

बिहारी पूर्वकालिक क्रियाओं को अधिक संक्षिप्त कर देते हैं इससे पर्याप्त कसावट आ जाती है। जिनका उदाहरण है "चुनती थी" "चाहती थी", "उर से लगाती थी", "पहनती थी" "उतारती थी"। वाक्यों को संक्षिप्त कर दिया गया है।

छला छबीले लाल को नवल नेह लहि नारि
चूमति चाहति लाय उर पहिरति धरति उतारि॥

भाषा के संक्षिप्त प्रयोग में बिहारी संस्कृत कवियों को भी पीछे छोड़ जाते हैं। कहीं - कहीं उन्होंने इतना संक्षिप्तता से काम लिया है कि अर्थ लगाना कठिन हो जाता है। बिना नायिका भेद की जानकारी के उनका अर्थ लगाना असम्भव हो जाता है। जिनके दोहे का अर्थ तबतक सम्भव नहीं है जब तक वह समाज नायिका का लक्षण ज्ञात न हो।

तिय तिथि तरनि किसोर वय पुन्य काल सम दोन
काहू पुन्यनि पाइयत बैस संधि संक्रोन॥

कहीं - कहीं पर अभिव्यक्ति की सफलता के लिए उन्होंने लम्बे समासों का प्रयोग किया है -

"विकसित नव मल्लिका कुसुम"

बिहारी के रस प्रधान मुक्तक अधिकतर श्रृंगार रस के हैं रस प्रधान मुक्तकों में बिहारी की भक्ति भावना के भी दोहे आ जाते हैं। इन की अभिव्यक्तियाँ बड़ी मार्मिक हैं।

बिहारी के मुक्तकों में वाक्य वैदग्ध्य कवित और रसात्मकता की त्रिवेणी प्रवाहित हुई है। प्रकृति चित्रण के भी कुछ दोहे रसात्मक मुक्तक हैं। विप्रलम्भ श्रृंगार के कुछ ऊहात्मक दोहे अवश्य रसमग्न करने की अधिक क्षमता नहीं रखते हैं।

बिहारी के सूक्ति प्रधान मुक्तक भी भावानुभवों पर प्रतिष्ठित हैं। सामाजिक सूक्तियों में कवि के अन्वीक्षण का आश्रय लिया। आर्थिक सूक्तियों सम्बन्धी मुक्तकों में चमत्कार है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि बिहारी सतसई के दोहे मुक्तक काव्य की दृष्टि से बहुत सफल हैं। इनमें रसात्मकता चमत्कार अनुभूति सामासिक शैली आदि पर सफल मुक्तक काव्य की सभी विशेषताएँ चरमोत्कर्ष पर पहुँची हुई हैं। अर्थात आचार्य शुक्ल के शब्दों में —

"मुक्तक में जो गुण होना चाहिए वह बिहारी के दोहे में अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँचा हुआ है इसमें कोई संदेह नहीं है।"

इसी के आधार पर पंडित आचार्य मिश्र इनका मूल्यांकन करते हुए लिखते हैं —

पार्श्वना निमित्त है उनकी रचना में ज्ञान का करिश्मा केवल चमत्कार नहीं हृदय और मन दोनों पर उनका सामंजस्य हो जो और में नहीं था।।

The End